आत्माराम शर्मा

२६ फरवरी १९६८ को ग्राम खरगापुर, टीकमगढ़, मध्यप्रदेश में जन्म. हिन्दी साहित्य में एम.ए. और एम.सी.ए. की उपाधि. नईदुनिया समाचार-पत्र में कला-समीक्षक के तौर पर लेखन. विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में कहानियाँ और कविताओं का प्रकाशन. 'गर्भनाल पत्रिका' के संस्थापक सदस्य एवं पूर्व-सम्पादक. सम्प्रति : जनसम्पर्क विभाग, मध्यप्रदेश के सृजनात्मक उपक्रम 'मध्यप्रदेश माध्यम' में उप प्रबन्धक.

सम्पर्क : डीएक्सई-२३, मिनाल रेसीडेंसी, जे.के. रोड, भोपाल-४६२०२३ (म.प्र.). ईमेल : atmaram.sharma@gmail.com

बातचीत

बेलारूसी हिन्दी-प्रेमी सुश्री अलेसिअ माकोव्स्काया से आत्माराम शर्मा की बातचीत

फ़िल्मों की बदौलत हिन्दी दुनियाभर में लोकप्रिय हो रही है

आत्माराम : हिन्दी प्रेमी पाठकों को अपने बारे में बताना चाहेंगी

अलेसिअ : मैं बेलारूस मैं रहती हूँ और २००५ में मैंने केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा से हिन्दी भाषा दक्षता डिप्लोमा प्राप्त किया। आजकल हिन्दी लेखों, कहानियों, दार्शनिक ग्रंथों तथा विभिन्न दस्तावेजों आदि का अनुवाद कर रही हूँ। बेलारूस में मेरे अलावा कोई अधिकृत हिन्दी अनुवादक नहीं है। मैं बेलारूस के नोटरी चैंबर में पंजीकृत एकमात्र हिन्दी अनुवादिका हूँ। 'विश्व हिन्दी पत्रिका २०११' में मेरा आलेख प्रकाशित किया गया है। इसके अलावा मैं हिन्दी की अध्यापिका भी हूँ।

अलेसिअ माकोव्स्काया

बेलारूसी राज्य शैक्षणिक विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि एवं केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा से हिन्दी भाषा दक्षता डिप्लोमा प्राप्त किया। 'विश्व हिन्दी पत्रिका २०११' में आलेख 'बेलारूस में मेरी हिन्दी : बचकानी अभिरुचि से लेकर व्यावसायिक कार्य तक' प्रकाशित। हिन्दी सेवी सम्मान समारोह-२००५, दिल्ली, राष्ट्रीय हिन्दी विकास सम्मेलन-२०१२, शिलोंग तथा विदेशी विश्व-विद्यालयों के लिए हिंदी पाठ्य पुस्तक निर्माण कार्यशाला-२०१२, वर्धा में प्रतिभागिता। डॉ. महाराज कृष्ण जैन स्मृति सम्मान से सम्मानित। सम्प्रति : बेलारूस के मीन्स्क नगर में निवास एवं हिन्दी अध्यापिका एवं अनुवादिका।

सम्पर्क : Brilevskaya str. 3–3 Minsk 220039 Belarus

Tel. : 37529-576-87-29; +375297933990

ब्लॉग/वेबसाइट : www.alankar-st.by

facebookwww.facebook.com/alesia.makovskaya

अपने हिन्दी प्रेम के बारे में बतायें।

मेरा हिन्दी प्रेम उस समय शुरू हुआ जब मैंने भारत की संस्कृति में रुचि लेना प्रारंभ किया और शीघ्र ही मुझे इस बात का एहसास हो गया कि हिन्दी भाषा का अध्ययन किए बिना भारत की संस्कृति का समग्रता एवं गहराई से ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकेगा।

बेलारूस में हिन्दी प्रेमियों के बारे में बताना चाहेंगी।

बेलारूस में ऐसे लोग ज़रूर हैं (लेकिन उनकी संख्या बहुत कम है) जो हिन्दी में रुचि रखते हैं। लड़कियाँ हिन्दी फ़िल्में पसंद करते हुए उसे मूल भाषा में देखना चाहती हैं। या फिर कोई भारतीय नृत्य सीखता है, बॉलीवुड डॉन्स वगैरह और उन्हें गीतों का अनुवाद चाहिए। कभी-कभी किसी को भारतीय दर्शन में दिलचस्पी होती है तो उन्हें दार्शनिक ग्रंथों के अनुवाद की ज़रूरत पड़ती है। लेकिन उन सभी को हिन्दी प्रेमी मुश्किल से कह सकती हूँ, क्योंकि मेरे विचार से सही हिन्दी प्रेमी वह होता है, जो हिन्दी के प्रचार के लिए प्रयास करता है, हिन्दी क्षेत्र में काम करता है।

रूस एवं योरोप की युवा पीढ़ी भारतीय संस्कृति एवं भाषाओं के बारे में क्या उतनी जानकारी रखती है जितनी भारतीय उपमहाद्वीप के युवा योरोप आदि के बारे में रखते हैं।

मेरे खयाल से अगर पूरे योरोप के बारे में कहें तो वहाँ की युवा पीढ़ी भारतीय संस्कृति और भाषाओं के बारे में शायद ज़्यादा जानकारी नहीं रखती है। भारत की युवा पीढ़ी पश्चिमी संस्कृति और भाषाओं से इसलिये भी ज्यादा परिचित हैं क्योंकि भारत में शायद उन विश्वविद्यालयों की संख्या कहीं ज़्यादा है जिनमें योरोपीय भाषाएँ पढ़ाई जाती है। जबकि योरोप में ऐसे विश्वविद्यालयों की संख्या कम है जिनमें

> भारत की एकजुटता के लिये हिन्दी ने बहुत बड़ा ऐतिहासिक और सांस्कृतिक योगदान दिया है, जबकि हिन्दी के मुकाबले अन्य भारतीय भाषाएँ क्षेत्रीय संस्कृतियों का प्रतिनिधित्व करती हैं।

भारतीय भाषाएँ पढ़ाई जाती है। रूस एवं योरोप के युवा अपनी संस्कृति एवं जीवनशैली में गहरे तक डूबे रहते हैं। हालांकि मेरा ऐसा मत है कि भारतीय संस्कृति योरोपीय संस्कृति की अपेक्षा दुनिया में ज़्यादा प्रभाव रखती है।

बेलारूस में हिन्दी शिक्षण और अनुवाद की क्या स्थिति है।

बेलारूस में एक भी विश्वविद्यालय ऐसा नहीं है जिसमें हिन्दी पाठ्यक्रम हो। अभी तक बेलारूस में जो हिन्दी साहित्य पाया जाता था, उसका अनुवाद या तो रूस में किया जाता था या तो बेलारूस में। लेकिन खुद हिन्दी से नहीं, बल्कि अंग्रेज़ी से। लेकिन पिछले कई सालों से मैं हिन्दी साहित्य का रूसी और बेलारूसी में तथा रूसी और बेलारूसी साहित्य का हिन्दी में अनुवाद कर रही हूं। एक प्रसिद्ध बेलारूसी साहित्यिक पत्रिका ने मेरे इस काम की ओर ध्यान दिया है और बहुत जल्दी मेरे द्वारा अनुवादित कई आधुनिक और शास्त्रीय रचनाएँ उस पत्रिका में प्रकाशित होंगी।

हिन्दुस्तान में हिन्दी और अन्य भारतीय भाषाएँ लगातार हाशिये पर धकेली जा रही है। ऐसे में देश एवं विदेश में आयोजित होने वाले हिन्दी सम्मेलनों की उपयोगिता को आप किस नजर से देखती हैं।

हरेक भाषा अपनी संस्कृति की वाहक होती है लिहाजा इसे बनाये रखने के लिये प्रचार-प्रसार करना अनिवार्य है। मेरे खयाल से भारत की एकजुटता के लिये हिन्दी ने बहुत बड़ा ऐतिहासिक और सांस्कृतिक योगदान दिया है, जबकि हिन्दी के मुकाबले अन्य भारतीय भाषाएँ क्षेत्रीय संस्कृतियों का प्रतिनिधित्व करती हैं। हिन्दी में विभिन्न भारतीय संस्कृतियाँ समाहित हो गई लगती हैं। अतः हिन्दी को दूसरों की तुलना में ज्यादा बढ़ावा देने की आवश्यकता है। इसका मतलब यह बिलकुल नहीं है कि अन्य भारतीय भाषाओं को भुला देना चाहिये। भारतीय जातियाँ अपनी संस्कृतियों और अपनी भाषाओं को संभालने में बड़ी सक्षम हैं।

हिन्दी अखबारों में हिन्दी को हिंग्लिश के तौर पर स्थापित करने की होड़-सी लगी हुई है। क्या आपको लगता है कि २०-३० सालों में हिन्दी का स्वरूप घर के भीतर बोली जाने वाली बोली का बन जायेगा।

हिंग्लिश काफ़ी पुराना विषय है और आजकल वह अधिक से और अधिक गंभीर होता जा रहा है। हाँ

अंतर्राष्ट्रीय भाषा होते हुए अंग्रेज़ी का प्रभाव बहुत ताकतवर है और इससे डरने का बहुत गहरा आधार है कि २०-३० सालों में हिन्दी घर की बोली बन सकती है। हालांकि गुजरे दौर में भले ही हिन्दी पर बहुतेरी संस्कृतियों और भाषाओं ने प्रभाव डाला था तो भी हिन्दी नया रूप पाते हुए भी हमेशा हिन्दी ही बनी रहती थी और घर की बोली बनी रहकर भी आखिर में घरों से निकलकर पूरे देश में फैलती थी। लेकिन वर्तमान दौर ज़रा मुश्किल जान पड़ता है। नहीं कहा जा सकता कि आने वाले समय में इसका स्वरूप कितना बदलेगा।

साहित्य के जरिये समाज कैसे आन्दोलित होता है।

एक रूसी कवि ने कहा : *'एक ही शब्द मार सकता है, मौत से बचा भी सकता है, एक ही शब्द सेना का नेतृत्व भी कर सकता है।'* इतिहास गवाह है कि किसी भी देश के साहित्य का प्रभाव देश के समाज पर असीमित है। और कई ऐसे रचनाएँ भी हैं जिसने सारे दुनिया के लोगों पर प्रभाव डाला। उदाहरण के लिए बाइबल लीजिए... रचनाओं को पढ़कर लोग कुछ सोचने-समझने लगते हैं। और जब बहुतों के सोच में एकता पैदा होती है तभी समाज में आन्दोलन भी पैदा हो सकता है जो देश भर में या दुनिया भर में भी फैल सकता है।

हिन्दी साहित्य में आपको कौन-सी विधा प्रिय लगती है।

हालांकि हिंदी साहित्य से मेरा बहुत निकट का परिचय नहीं है। तो भी निःसंदेह पद्य मुझे सबसे ज़्यादा प्रिय लगता है। पद्य पाठकों को सबसे प्रभावशाली रूप से रचनाकर के विचारों और अनुभवों के बारे में बता देता है।

आधुनिक हिन्दी साहित्य में वर्तमान समय-समाज का अंकन हो पा रहा है।

हाँ, यह बिल्कुल सही है। कोई भी लेखक, चाहे वह कितना भी काल्पनिक साहित्य सृजन करता हो, असल में अपने देश, समय और समाज की परिस्थितियों के बारे में लिखता है और इन परिस्थितियों के विषय पर अपनी राय व्यक्त करता है। और इस राय में वर्तमान समय-समाज का अंकन अवश्य होता है।

विदेशों में लिखे जा रहे हिन्दी साहित्य के बारे में एक राय यह बनती है कि यह नॉस्टेल्जिया का साहित्य है।

एक राय यह भी है कि कोई भी साहित्य हमेशा नॉस्टेल्जिया का ही साहित्य होता है और नॉस्टेल्जिया के बिना साहित्य भी नहीं होता। मैं इससे सहमत नहीं हूँ लेकिन यह राय भी सोचनीय है। मुझे नहीं लगता कि विदेशों में लिखा जा रहा हिन्दी साहित्य पूरी तरह से नॉस्टेल्जिया का साहित्य है, लेकिन हाँ इस राय में सच्चाई का बड़ा हिस्सा है। असल में यह अव्यक्त नॉस्टेल्जिया ज़्यादा है, स्पष्ट नॉस्टेल्जिया कम।

> *कोई भी लेखक, चाहे वह कितना भी काल्पनिक साहित्य सृजन करता हो, असल में अपने देश, समय और समाज की परिस्थितियों के बारे में ही लिखता है और इन परिस्थितियों के विषय पर अपनी राय व्यक्त करता है।*

लेखक एक आम आदमी से किस प्रकार भिन्न होता है।

अच्छी साहित्यिक रचना को रचने के लिए पिटी-पिटाई बातों से, पिटे-पिटाए विचारों से मुक्त हो जाना चाहिए। आम आदमी इसीलिए आम है, क्योंकि उसके मन में बहुत पिटे-पिटाए विचार हैं,जबकि अच्छे लेखक का मन उन से मुक्त है, इसलिए वह उत्कृष्ट कृति को आकार दे पाता है।

आज का युवा वर्ग साहित्य से दूर होता जा रहा है, क्या कहेंगी।

एक तरफ़ लगता है कि ऐसा ही हो रहा है, लेकिन दूसरी तरफ़ युवा पीढ़ी पहले से कहीं ज्यादा साहित्य पढ़ती है। क्या सबसे लोकप्रिय १०० पुस्तकों की सूची आज हाज़िर नहीं है? जरूर है! नया-नया साहित्य आता है, युवा वर्ग पुराने साहित्य को छोड़कर नए में रुचि रखता है। यह स्वाभाविक प्रवृत्ति है।

हिन्दी के प्रिय साहित्यकारों के बारे में बताना चाहेंगी।

जैसे कि मैंने पहले कहा कि हिंदी साहित्य से मेरा निकट परिचय नहीं है और मैं बहुत नामों को नहीं जानती। क्लासिक साहित्यकारों में से मैं सबसे पहले मुंशी प्रेमचंद का उल्लेख करना चाहूँगी। वैसे मैं अभी उनका 'ग़बन' पढ़ रही हूँ तथा मैंने उनकी कई कहानियों का अनुवाद भी किया है और उनमें से कइयों का उसी बेलारूसी पत्रिका के लिए। प्रेमचंद की रचनाओं का सद्गुण है - पात्रों की मनोवैज्ञानिक विशेषताओं का गहरा और विस्तृत वर्णन। उस समय के अन्य लेखकों की अपेक्षा प्रेमचंद की रचनाओं में तत्कालीन भारत

> पूरी दुनिया में हिंदी फिल्में साल-दर-साल अधिक से अधिक लोकप्रिय हो रही हैं और यद्यपि 'हिंग्लिश' की समस्या ने यहाँ भी प्रवेश किया है, तथापि फिल्मों की बदौलत हिंदी संसार भर में प्रचार पा रही है।

की राजनीतिक और सामाजिक समस्याओं पर सबसे अधिक रोशनी डाली जाती है। जिन आधुनिक लेखकों की रचनाओं को मैंने पढ़ा तथा जिनकी रचनाओं का अनुवाद किया उनमें कर्त्तार सिंह दुग्गल, जिनके 'चाँदनी रात का दुखेत' नामक संग्रह का अनुवाद मैं जल्दी खतम करूँगी, विमल चंद्र पाण्डेय, एस.आर. हरनोट, रामआसरे गोयल, अनीता कपूर एवं सईद अयूब आदि प्रमुख हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी के भविष्य को आप किस नज़र से देखती हैं।

आज भी दुनिया में हिंदी की मांग बहुत कम है। लेकिन मेरे विचार से आज की दुनिया पहली की अपेक्षा ज़्यादा खुली है, ज़्यादा और ज़्यादा भारतीय विदेश जा रहे हैं तथा योरोपीय भी भारत पहुंचते हैं। इसके परिणाम-स्वरूप हिन्दी धीरे-धीरे सारी दुनिया में फैल रही है। एक बहुत अच्छा उदाहरण है - पूरी दुनिया में हिंदी फिल्में साल-दर-साल अधिक से अधिक लोकप्रिय हो रही हैं और यद्यपि 'हिंग्लिश' की समस्या ने यहाँ भी प्रवेश किया है, तथापि फिल्मों की बदौलत हिंदी संसार भर में प्रचार पा रही है। इसके अलावा अनेक देशों में हिंदी प्रचार करने वाली विभिन्न संस्थाएँ पहले से ही मौजूद हैं, जिनमें विश्व हिन्दी सचिवालय भी शामिल है। इस प्रकार मैं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी का अच्छा भविष्य देखती हूँ, कम से कम ऐसी आशा करती हूँ कि हिन्दी का भविष्य उज्जवल होगा।

हिन्दी के नाम पर प्रायोजित पुरस्कारों, सम्मानों और विदेश यात्राओं की भरमार है, क्या इससे साहित्य लेखन के स्तर में इजाफा हुआ है या फिर स्तर में गिरावट आई है।

यह इस बात पर निर्भर है कि उन पुरस्कारों, सम्मानों और विदेश यात्राओं के आयोजन करने वाले लोग साहित्य का कैसा स्तर मानते हैं, लेखन का कैसा स्तर। इस विषय पर हर किसी की राय अलग-अलग हो सकती है। लेखक कई प्रकाशकों को अपनी किताब देता है और देखता है कि एक प्रकाशक को वह बिल्कुल पसंद नहीं आती जबकि कोई दूसरा उसे पसंद कर लेता है। इसी प्रकार अगर आयोजन करने वाले लोगों का मापदण्ड ऊँचा होता है तो इससे साहित्य लेखन के स्तर में इजाफा होता है, लेकिन अगर आयोजन करने वाले निम्न स्तर पर उतर आते हैं तो इससे गिरावट आती है।

हिन्दी साहित्य के पाठकों के बारे में आपकी क्या राय है।

मेरे विचार से आज का युवा पुस्तकालय और पुस्तकें खरीदकर पढ़ने की बजाय इंटरनेट के जरिये ज्यादा किताबें पढ़ता है।

दक्षिण अफ्रीका में सम्पन्न विश्व हिन्दी सम्मेलन के बारे में आप क्या कहेंगी।

सच पूछें तो उस सम्मेलन के बारे में मैं बहुत कुछ नहीं जानती। उस सम्मेलन के बारे में जब पता चला तो मैंने भाग लेने के लिए अनुरोध भेजा था, लेकिन जवाब नहीं पाया। मैंने इंटरनेट में कई समीक्षाएँ पढ़ी, उनसे कुछ जनकारी और कई नाम भी पता चल गए।

दुनियाभर में फैले विदेशी मूल के हिन्दी प्रेमियों के बारे में आप क्या कहेंगी।

पिछले कई सालों में मुझे कई सम्मेलनों और सेमिनारों में भाग लेने का मौका मिला। उनमें से अनेक हिन्दी प्रेमियों से परिचय हुआ और इस परिचय पर मुझे बहुत गौरव है। उन सभी लोगों से मैं बड़ी खुशी से संपर्क रखती हूँ। इसके अलावा, इंटरनेट में फेसबुक और अन्य सामाजिक नेटवर्क की बदौलत भी मैं दुनियाभर में बहुत से हिन्दी प्रेमियों से संपर्क कर सकती हूँ।■